प्राचीन यूनान की धार्मिक दशा

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – III Year

Paper – VII (Ancient Civilizations (Down to 600 B.C.)

प्राचीन यूनान की सभ्यता के तत्कालीन धार्मिक जीवन एवं विश्वासों की जानकारी के लिए होमर के महाकाव्य दर्पण की भांति हैं। यदि यह कहा जाए कि होमर ने अपनी काव्य-कला के द्वारा तत्कालीन धर्म को सुस्पष्ट एवं परिष्कृत कर दिया, तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। होमर के बाद का यूनान अपने धार्मिक विश्वासों के लिए होमर का ऋणी है। उसका साहित्य यूनानी संस्कृति के लिए बाइबिल सिद्ध हुआ।

होमर में हमें यूनान के दर्शन एवं चितनधारा की पृष्ठभूमि प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में यूनानी धर्म के विकास में उसका अपूर्व योगदान है। होमर-युग के पहले मिनोअन तथा माइमीनियन सभ्यताओं के काल से यूनान में भूत-प्रेतों तथा मृत पूर्वजों की पूजा होती थी एवं प्रकृति की प्रजनन-शक्ति की आराधना भी प्रचलित थी। इस धर्म में आशावाद एवं प्रसन्नता का अभाव था। विचित्र एवं रहस्यमय शक्तियों

के द्वारा प्रतिशोध के भय से मनुष्य का मन स्थिर तथा शांत रहता था। पर होमरयुगीन धर्म स्वाभाविक प्रसन्नता एवं आर्शीवाद से परिपूर्ण था। आत्मा-परमात्मा अथवा पाप-पुण्य के विश्लेषण पर अधिक जोर नहीं दिया गया, परंतु मानव-जीवन को सुखी एवं प्रसन्न बनाने पर अधिक ध्यान दिया गया। जिन देवी-देवताओं की कल्पना की गई, वे मनुष्य के शत्रु नहीं वरन् हितैषी एवं मित्र थे। उनका स्वरूप मानव का था तथा वे मानवोचित गुणों से विभूषित थे। वे भूत-प्रेतों की तरह पाताल-निवासी नहीं, वरन् ओलिम्पस पर्वत की स्वर्णिम चोटी पर निवास करते थे। पुराने धर्म के कुछ तत्त्व अभी भी इस नए धर्म में विद्यमान थे। कुछ पुराने अंधविश्वास भी बने रहे। पर, अपनी समग्रता में, अपने स्वरूप में, यह नया धर्म पराने धर्म से पूर्णतया भिन्न था। प्रकृति की प्रजनन-शक्ति की आराधना होती रही, पर नई कथाओं के द्वारा उसके स्वरूप में परिवर्तन हो गया। देवताओं का स्वरूप एवं चरित्र नैतिक तथा बौद्धिक दृष्टि से अत्यंत उदार और प्रेरणादायक बना डाला गया।

यूनान के धार्मिक जीवन और विश्वास का आधार हम होमर को मान सकते है| होमर ने जिन देवी-देवताओं का वर्णन किया है, उनका व्यक्तित्व एवं चरित्र सुस्पष्ट तथा आदर्श है। प्रत्येक देवी-देवताओं को विशिष्ट गुणों एवं क्षेत्रों का अधिष्ठाता माना गया है । जियुज (Zeus) देवों और मनुष्यों का सर्वोच्च देवता एवं नियता है । एथेना (Athena) देवी चिरपवित्र कुमारी है तथा सभी कलाओं की अधिष्ठात्री है। अपोलो (Apollo) देवता सूर्य-देवता हैं तथा स्वस्थ्य के अधिष्ठाता है । उनकी कृपा से सभी रोग दूर हो जाते हैं। ये देवता मानव के शुभचिंतक एवं हितैषी हैं। इसके पहले ये देवता बहुत अंश तक स्थानीय थे, पर अब

उनका चरित्र और व्यक्तित्व अत्यंत शादा एवं विश्वाश जन हो गया । इस दिशा में होमर का योगदान अद्‌वितीय था। जिन देशो एवं भू-भागों में उसके महाकाव्यों का अध्ययन होने लगा, वहाँ इन देवी-देवताओं की आराधना भी होने लगी। इसलिए इन धार्मिक विचार प्रथाओं के प्रसार में उसकी कविता ने बहुत योगदान किया। यूनानी जाति की सांस्कृतिक एकता के विकास में उसका काव्य अत्यंत सहायक सिद्‌ध हुआ। होमर के दो अमर महाकाव्य थे वे ईलियड तथा ओडिसी थे|

यूनान में इसी समय कुछ धार्मिक स्थानों का उदय हुआ, जो ग्रीक जाति की सांस्कृतिक एकता को सबल बनाने में सहायक सिद्‌ध हुए ओलिम्पिया (Olympia) में जियुज देवता के प्रसिद्‌ध मंदिर के सामने प्रतिवर्ष बड़ा मेला लगता था, जहाँ एक दूसरे विरोधी राज्यों के नागरिक भी बड़े प्रेम से खेल-कूदों में भाग लेते थे। इसी प्रकार अपोलो देवता का मंदिर डेल्फी (Delphi) में था वहाँ भविष्य का विचार कराने के लिए यूनान के सभी भागों से नागरिक आते थे। इस मंदिर के पुजारी से उन्हें भविष्य का संकेत मिलता था।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि यूनानी संस्कृति की आधारशिला होमर-युग में प्रतिष्ठित की गई और धार्मिक विश्वास भी इस युग में प्रबल रही| यह वास्तव में यूनानी सभ्यता का उषाकाल था। बाद में विकसित होने वाले यूनानी सभ्यता की रूपरेखा इस युग में तैयार हो गई थी।